बीए. प्रथम वर्ष – हिन्दी साहित्य – 2018–19

प्रथम प्रश्न पत्र – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

समय : 3 घंटे **उत्तीर्णांक : 36** **पूर्णांक – 100**

इकाई – 1

1. वीसलदे– रास–नरपति नाल्ह, संपादक : डॉ. ब्रजनारायण पुरोहित, भाग 3 : वियोग संदेश पुनर्मिलन

गज–गामणी मृग–लोचनि नारि, सुणे सहेली कहू एक बात,
दूति वात कहै समझाइ, मयण की वेदण सही निसंक, निगुणा काग
तूं कुरळि म आइ, कहि नई गोरी थारा प्री अहिनाण,
बरस बत्रीस हो बाळइ वेस, पंडियउ मोहियउ देखि बजार
वात सुणी राजा अधिक उल्लास, अेकसरउ तुम्ह घर दिसि हालि

2. ढोला मारू रा दूहा – संपादक – नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, रामसिंह (मालवणी विलाप)

धावउ धावउ हे सखी, सालह चलंतउ हे सखी
बीछुड़ता ई सज्जणां , सज्जणियां बवळाई कई, हड़ रे जीव
निल्लज तूं, बीछड़ता ही सज्जणा –सिंधी खड़घ,
ढोला हूं तुझ बाहिरी, सुंदर सोव्व सिंगार सजि,
चंदा तो किण खंडियउ, चम्पा केरी पांखड़ी

3. विद्यापति : भनई विद्यापति : संपादक : कृष्ण मोहन झा

जय जय संकर, जय जय त्रिपुरारि, नंदक नंदन कदंबक तरु–तर,
देख–देख राधा रूप अपार, आज पेखल नंद – किशोर ,
सजनी कान्हा के कहब बुझाई

4. अमीर खुसरो – दोहे :

अपनी छवि, आ साजन मोरे नयन में खुसरो रैन सुहाग की, गोरी सोवे सेज पर , खुसरो दरिया प्रेम का

मुकरिया :

आप हिले और मोहे हिलाए , ऊंची अटारी पलंग बिछायो

लिपट लिपट वाके सोई, सेज पड़ी मोरे आंखो आए

शोभा सदा बढ़ावन हारा

गीत :

छाप तिलक सब छीनी, जब यार देखा नैनभर,

सकल बन फूल रही सरसो –

इकाई – 2

कबीर – ग्रंथावली – संपादक – डॉ. श्यामसुन्दर दास

गुरुदेव को अंग – 1

सतगुर की महिमा अनंत, सतगुर बापुरा क्या करै

सतगुर सांचा सूरिवां , पासा पकड़ा प्रेम का , पूरे सू परचा

विरह को अंग – 2

विरहनि उभी पंथ सिरि, आंधड़ियों झांई पड़ी,

इस तन का दीवा करौ,

कथणी बिना करणी को अंग – 3

मैं जान्यूं पढ़िबो भलो, कबीरा पढ़िबा दूरि कर

ररै मम चित लाई, कबीर पढ़िया दूरि करि,

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ,

भेष को अंग– 4

कैसो कहा बिगारियो, बेसनो भया तो क्या भया,

कबीर माला काठ की, तन को जोगी सब करै

पद –

दुल्हनी गावहुं मंगलाचार, मन ने मनहि उलटि समाना, एक अचंभा देख्या रै भाई

मन रे जागत रहिए भाई, हम न मरिहै मरिहै संसारा

6 – जायसी : संपादक – रामचन्द्र शुक्ल

मानसरोदक खंड :

एक दिवस पून्यौ तिथि आई, खेलत आई मानसरोवर, मिलहिं रहसि सब, सरवर तीर पदमिनी आई धरि तीर सब कंचुकि सारी, लागि केलि करै मझ नीरा, सखि एक तेहि खेल न जाना, कहा मानस चाह सो पाई

नागमति वियोग खंड :

नागमति चित उर पथ हेरा, पिउ वियोग अस बाउर जीउ

पाट महादेव हिये न हारू, चढ़ा आसाढ़ गगन घन गाजा,

सावन बरस मेह अति पानी, भा भादो दूभर अति भारी,

कातिक सरस चंद पियारी, पूस जाड़ थर थर तन कांपा

7 – विनय पत्रिका : तुलसीदास , संपादक – वियोगी हरि (विनय पत्रिका)

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे, ऐसी मूढ़ता या मन की, केसव कहि न जाई का कहिये

जो निजमन परिहरै विकारा, विश्वास एक राम को, ऐसा को उदार जग माहिं, कबहुंक बहौं यहि रहनि रहौंगो

8– सूर सौरभ : नंद किशोर आचार्य

अविगत गति कछु कहत न आवै, मेरो मन अनत कहां सुख पावै, तजौ मन हरि बिमुखन को संग

मैया, मैं तो चंद खिलौना लैहों, उपमा नैनन एक गहि, निर्गुण कौन देस को वासी

इकाई – 3

9 – मीरा : शंभूसिंह मनोहर

मन रे परसि हरि के चरण, बसो मेरे नैनन में नंदलाल,

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर,

आलि रै मेरे नयन बान पड़ी, मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

मैं तो सांवरे संग राची, मैं तो गिरधर के घर जाऊं, माई री मैं तो लियो गोविंदो मोल

राणाजी थै जहर दियौ म्है जाणी, सांप पिटारा राणाजी भेज्या

10 – रहीम : रहीम ग्रंथावली , संपादक – श्री विद्यानिवास मिश्र, श्री गोविंद रजनीश

अमर बेलि बिनु मूलकी, अमृत ऐस वचन में, अरज गरज मानै नहीं, असमय परै रहीम कहि, आर

घटै नरेस ढिंग, आप न काहू काम के,

आवत काज रहीम कहि उरग, तुरंग नारि नृपति, ऊगत जाहि किरण सो

एक उदर दो चोंच हैं, एकै साधै सब सधै,

ए रहीम दर–दर फिरहि, ओछो काम बड़ो करै,

अंजन दिया तो किरकिरी, अंड न बौड़ रहीम कहि,

कदली सीप भुजंग मुख, कमला थिर न रहीम कहि,

करत न निपुनई गुन बिना, करमहीन रहिमन लखो, कहि रहीम इक दीप ते

11– रसखान : रसखान ग्रंथावली, संपादक : विद्यानिवास मिश्र

मानुष हौं तो वही रसखान, या लकुटी अर कामरिया पर, मोरपंखा सिर ऊपर राखो, एक समै मुरलि धुनि मैं,

गोवगुनी गुनिका गंधर्व, खेलन फाग सुहाग भरि, कान्हा भए बस बांसुरी कै, कहा कहूं सजनी संग की रजनी,

कौन ठगौरी, आज गई हुति मोरहिं

12– सहजो बाई : सहज प्रकाश

सतगुरू महिमा का अंग –

दोहा : गुरू है चार प्रकार के, हरि किरण जो होय तो, अड़सठ तीरथ गुरु चरण , गुरु वचन हियरे धरै

साध महिमा –

साध मिलो गुरु पाइया ,सहजो साधन के मिलै ,सहजो संगत साध की ,सहजो दरसन साध का

प्रेम को अंग

प्रेम दिवाने जो भए , मन में तो आनंद रहै , प्रेम लटके दुर्लभ महा

पद

हमारे गुरु पूरन दातार, सखी री आज आनंद देव बधाई, अब तुम अपनी ओर निहारो, गोविंद गुन क्यों नहीं गावो

इकाई – 4

आदिकाल और भक्तिकाल का परिचयात्मक इतिहास लेखन परम्परा, नामकरण, काल विभाजन, परिस्थितियां प्रवृत्तियां, पूर्वापर सीमा निर्धारण।

इकाई – 5

काव्यशास्त्र : अर्थ, अभिप्रेत, व्यवहार, औचित्य, काव्य गुण, दोष, शब्द शक्तियां,

अलंकार : अर्थ , विभिन्न आचार्यों के मत, अलंकार का महत्त्व प्रकार व उदाहरण ।

प्रमुख अलंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, दीपक, संदेह, भ्रांतिमान, अपह्नुति, दृष्टांत, उदाहरण, विरोधाभास, मानवीकरण, विशेषण – विपर्यय, विशेषोक्ति, विभावना ।

परीक्षकों के लिए निर्देश :–

1. प्रश्न–पत्र तीन खंडों क्रमशः अ, ब, और स में विभक्त होगा।
2. खंड अ में प्रत्येक इकाई से अधिकतम 2 प्रश्न रखते हुए सभी 5 इकाइयों से कुल 10 लघुत्तरात्मक प्रश्न अनिवार्यतः पूछे जाएंगे।
3. खंड ब में प्रथम 3 इकाइयों में से व्याख्या संबंधी कुल 7 व्याख्या प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थी को किन्हीं 5 व्याख्याओं को अनिवार्य रूप से हल करना होगा।
4. खंड स में पांचों इकाइयों में से 4 आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को 2 प्रश्न अनिवार्य रूप से हल करने होंगे।
5. प्रश्न–पत्र वर्तमान में निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार हो।

विस्तृत अंक योजना –

खण्ड	कुल प्रश्न	अनिवार्य प्रश्न	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	शब्द सीमा	विवरण
अ	10	10	2	20	50	खंड अ में प्रत्येक इकाई से अधिकतम 2 प्रश्न रखते हुए सभी 5 इकाइयों से कुल 10 लघुत्तरात्मक प्रश्न अनिवार्यतः पूछे जाएंगे।
ब	7	5	8	40	200	प्रथम 3 इकाइयों में से 7 व्याख्या संबंधी प्रश्न पूछे जाएंगे। जिनमें से 5 प्रश्न अनिवार्य रूप से विद्यार्थियों को हल करने होंगे।
स	4	2	20	40	500	5 इकाइयों में से 4 आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएं –जिनमें प्रत्येक इकाई से अधिकतम एक प्रश्न पूछा जाएं।

सहायक ग्रंथ :–

1. भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य – डॉ. शिवकुमार मिश्र
2. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास – डॉ. गुलाब राय
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. रामचन्द्र शुक्ल
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र
5. हिन्दी साहित्य का अतीत – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
6. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां – डॉ. शिवकुमार शर्मा
7. हिन्दी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी
8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
9. अलंकार पारिजात – डॉ. नरोत्तम स्वामी
10. हिन्दी साहित्य का अभिनव इतिहास – डॉ. वशिष्ठ अनूप
11. काव्यांग कौमुदी – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र